शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2013

सम्पादकीय

बुराई पर विजय के लिए संयमपूर्ण जीवन

शब्द-ब्रह्म की साधना में संलग्न मनीषियों के सहयोग से प्रारंभ हुए आनलाइन रिसर्च जर्नल को एक वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। इस एक वर्ष में शब्द-ब्रह्म के साथ देश और विदेश के अनेक विद्वतजन जुड़े और उन्होंने बहुमूल्य सुझाव दिए। जब भी हम एक सत् उद्देश्य को लेकर किसी लक्ष्य की ओर प्रस्थान करते हैं, तब अनेक व्यक्तियों की सद्इच्छाएं साथ में जुड जाती हैं। प्रकाशन में एक बात महत्वपूर्ण रही कि जिनके साथ कभी व्यक्तिगत मुलाकात नहीं हुई, जिनसे पूर्व में कभी मिलना नहीं हुआ, उन्होंने शब्द-ब्रह्म पर पूर्ण विश्वास व्यक्त किया। इसका मुख्य कारण यही समझ में आता है कि भारत में शब्द की महिमा अपरंपार रही है। वेदों का मंत्र है कि इस चराचर जगत में जब कुछ भी नहीं था तब शब्द ही था, प्रलय के पश्चात शब्द ही रहने वाला है। प्रथमाक्षर की साधना करने की भारत में सुदीर्घ परंपरा रही है। साहित्यकारों ने पतनशील और निराशा के गर्त में डूबने वाली मनुष्यता को शब्द के द्वारा ही संभालने का महत् कार्य किया है। आचरण से शब्द को ताकत मिलती है। विश्वस्त पूर्ण समाज में माना जाता है कि मनुष्य ने जिस शब्द का उच्चारण किया है, वैसा आचरण वह करेगा ही। जिस प्रकार जीवन के लिए श्वास जरूरी है उसी प्रकार समाज के जीवित रहने के लिए विष्वास आवश्यक है। यह विश्वास कायम रखने की जिम्मेदारी जितनी शब्द पर है उससे कहीं अधिक उन शब्दों के अनुसार आचरण पर है। आज समाज के सामने विश्वास का संकट है। देश और दुनिया में ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जब इस विश्वास को बार-बार खंडित किया गया है। समाज में अविश्वास अशान्ति के मुख्य कारणों में से एक है। यह प्रश्न भी विचारणीय है कि दुनियाभर में धार्मिक विश्वास के प्रति एक किस्म की कट्टरता में वृद्धि हुई है, परंतु आपसी विश्वास को अनेक बार शर्मसार होना पड़ा है। धर्म भावना का मूलाधार संयम में निहित है, परंतु बाजारवाद के आगे संयम की बात करना बेमानी हो गया है। आज मनुष्य समाज दोनों हाथों में लड्डू रखना चाहता है। एक ओर तो वह शांति की कामना कर रहा है, दूसरी ओर अपनी भोगेच्छाओं को बाजार के हवाले कर रखा है। विश्वास के संकट में कहीं न कहीं बाजार की भागदारी भी दिखाई दे रही है। आज जबकि मनुष्य समाज की सारी गतिविधियों को बाजार संचालित कर रहा है, उसमें बाजार में शुद्धता की भावना कहीं परिलक्षित नहीं हो रही है। बिजनेस एथिक्स या व्यापारिक नैतिकता का पाठ तो पढ़ाया जा रहा है, परंतु व्यवहार में उसका पालन कितना किया जा रहा है, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। इसका असर मनुष्य के सामाजिक संबंधों पर भी दिखाई दे रहा है। असत्य के मनोविज्ञान ने मनुष्य को चारों ओर से जकड़ लिया है। आज जीवन के हर क्षेत्र में इस प्रकार की छद्म व्यवस्था से मुक्ति की छटपटाहट दिखाई देती है। लेकिन मुक्ति का कहीं कोई उपाय नजर नहीं आ रहा है। आज शब्द को उसके अर्थ के समान आचरण के माध्यम से एक बार पुनः

ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2013

सिद्ध करने की आवश्याकता बलवती हो गई है। परस्पर के विश्वास के खो जाने का मतलब है मनुष्यता का नाश होना। शब्द को ब्रह्म के स्थान पर पुनः अवस्थित करने के लिए संयमपूर्ण जीवनशैली ही एकमात्र उपाय है। अवतारी पुरुष भगवान श्रीराम ने संयमपूर्ण जीवन व्यतीत कर समाज को निर्भय किया। बुराई पर विजय तो संयम से ही प्राप्त की जा सकती है। शब्द-ब्रह्म के सुविज्ञ पाठकों को दशहरे और दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- डॉ. पुष्पेंद्र दुबे